International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 05-11-2022; Accepted: 21-11-2022; Published: 07-12-2022
Volume 8, Issue 6, 2022, Page No. 99-100

भारत में नगरीकरणः उत्पत्ति, प्रक्रिया एंव विकास– एक अध्ययन

मोनू
शोधार्थी, (इतिहास), महर्षि दयान्नद विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा, भारत

सारांश
भारत नगर सभ्यता का जनक है। ईसा से हजारों वर्ष पूर्व जबकि यूरोप के लोगों को झोपड़ियों में अच्छी प्रकार से रहना भी नहीं आया था, यहाँ ऐसे नगर बसे हुए थे जो कि कई मायनों में आज के नगरों से बराबरी कर सकते थे।
लेकिन जैसा कि नगर सभ्यता के मर्मज्ञ सेवियत् विद्वान डा. कॉरोत्स्काया का कहना है, "इतिहास व कलाबिदू और दूसरे, जिन्होंने भी भारतीय सभ्यता और वास्तुकला के बारे में लिखा है, लगभग सभी ने नगरीय सभ्यता व भारतीय नगरों के बारे में या तो चुप्पी बरती है या फिर उसका सरकारी तौर पर उल्लेख मात्र किया है। नगरों की स्मृति के संक्षिप्त विवरण से आरम्भ करके यह एक प्रमुख विषय के रूप में उभरा जिसने प्रमुख ऐतिहासिक परिवर्तनों के संबंध में अंर्तदृष्टि प्रदान की। नगरीय अध्ययन को जो सर्वाधिक चुनौतिपूर्ण बनाता है वह यह है कि यह मात्र अन्तर्विषयक नहीं है अपितु इसकी सीमाएं विघटित होती रहती हैं और नए तथा अप्रत्याशित उत्तरों के लिए एक संयुक्त प्रयास आरंभ हो जाता है।

मूल शब्दः सभ्यता, नगर सभ्यता, वास्तुकला, सरकारी तौर, अंतर्दृष्टि, चुनौतीपूर्ण, अप्रत्याशित आदि

प्रस्तावना
राष्ट्रवाद लोगों का ऐसा समुदाय है जो व्यक्ति किसी विशिष्ट क्षेत्र में निवास करते ह पृथ्वी पर शहर सर्वप्रथम तब दिखाई दिए जब प्रारंभ में मानव को दो अवस्थाओं से गुजरना पड़ा। इनमें से एक अवस्था पूर्व पाषाण युग में हुई। इस समय मानव गुफाओं में से निकलकर बाहर खुले क्षेत्र में आया जहाँ उसने पेड़ो की शाखाओं व पत्तों की सहायता से झोपड़ियों बनाई और उसका यह कदम ही नगरीकरण की दिशा में सबसे पहला कदम था। उत्तर पाषाण युग में मानव ने खेती करना, पशुओं को पालना शुरू कर दिया, वह एक स्थान पर प्रेम की भावना के साथ मिल–जुलकर रहने लगा। इस तरह से इस कृषक समुदाय ने सुरक्षा की भावना से एक साथ रहकर ग्रामों के निर्माण में सहयोग दिया। सबसे प्राचीन गाँव ने ही वर्तमान में नगरों का रूप धारण किया, वर्तमान नगर गांवो का ही परिवर्तित रूप है। ऐतिहासिक खोजों एवं शोध–पत्रों द्वारा यह ज्ञात हुआ है कि ईसा से 4000–6000 वर्ष पूर्व तक नगर अस्तित्व में आ चुके थे और ईसा से 3000 वर्ष पूर्व में तो ऐसे नगरों का जन्म हो चुका था जिस को हम वास्तविक रूप से नगर का नाम दे सकते है। प्रारंम्भ में तो नील व दजला–फरात नदियों की घाटियों में नगरों का विकास हुआ। इनके बाद सिंधु घाटी में मोहनजोदडों, हड़प्पा, चीन में शिंयाग, यूरोप में एथेंस और स्पार्टा व मेसोपोटाामिया में टिकल नगर इत्यादि नगरों की स्थापना हुई।

सिंधु घाटी सभ्यता तथा महाजनपद काल (छठी शताब्दी ई॰पू॰) में नगरों का उद्भव तथा विकास
भारतीय इतिहास में नगरीकरण एक प्रमुख समस्या है। उपलब्ध प्रमाणों से स्पष्ट है कि भारत में नगरीकरण की प्रक्रिया निरंतर नहीं थी और समय–समय पर तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक गतिविधियों व परिस्थितियों के अनुसार उसमें एनेक उतार–चढ़ाव आए। जिसके कारण भारतीय इतिहास में नगरीकरण को उत्थान तथा पतन के कई चरणों से गुजरना पड़ा। भारतीय उपमहाद्वीप के पश्चिमोत्तर भाग में भारत की प्रथम चरण की नगरीय सभ्यता के रूप में सिंधु घाटी की सभ्यता विकसित हुई। यह नगरीय सभ्यता केवल सिंधु घाटी तक ही सीमित नहीं थी। सिंध प्रांत में मोहनजोदड़ों, चन्हुदड़ों, आमरी आदि के पुरास्थल हैं। इसी प्रकार से पंजाब में हड़प्पा, सरायखोला, जलीलपुर आदि पुरास्थल हैं। भारतीय उपमहाद्वीप में रोपड़, मिताथल, धौलावीरा, कालीबंगा, लोथल, बनावली, द्वैमाबाद इत्यादि से सैन्धव सभ्यता के प्रथम नगरीय सभ्यता के होने के अवशेष पाए गए है।
ग्यारह सौ पंचास (1150) वर्षो के पश्चात उत्तर वैदिक काल में लगभग 600 ई॰ पू॰ के आस पास हमें पुनः भारतीय उपमहाद्वीप के मध्य देश, जो सरस्वती से गंगा दोआब तक विस्तृत था, में फिर से नगरों की अवस्थिति उत्तर भारत में आर्य सभ्यता के साथ दिखाई दी। अंगुत्तर निकाय (बौद्ध ग्रथं) एवं भगवतीसूत्र जैन ग्रंथ में 16 महाजनपदों का उल्लेख मिलता है। इसमें से 14 राजतंत्रात्मक एवं दो गणतत्रांत्मक (वाज्जि संघ तथा मल्ल) थे। इस भारतीय उपमहाद्वीप में भारत की द्वितीय चरण की नगरीय सभ्यता का नाम दिया गया है। महत्वपूर्ण है कि द्वितीय नगरीय सभ्यता प्रथम नगरीय सभ्यता की भांति विलोपित नहीं हुई अपितु इसकी प्रक्रिया निरंतर चलती रही।

राजपूत काल, मध्यकाल तथा औपनिवेशिक काल में नगरीकरण
पूर्व मध्यकाल में राजपूत काल के दौरान भारत में कुछ नगरों का उत्थान तथा विकास हुआ। लेकिन भारत में तुर्को के आक्रमण को नगरीय क्रांन्ति के रूप में देखा जा सकता हैं। अरबों ने मुल्तान तथा मंसूरा में मुस्लिम बस्तिया स्थापित की। लेकिन भारत में तृतीय चरण की नगरीय सभ्यता की वास्तविक पृष्ठभूमि का निर्माण तुर्को के आगमन से ही शुरू होता है। इब्नबतूता दिल्ली को इस्लामी दुनियाँ का सबसे बड़ा शहर बताता है।
मुगलकाल में बड़े–बड़े एवं सम्पन्न नगरों का निर्माण हुआ। अकबर के साम्राज्य में 120 बड़े शहर तथा 3200 कस्बे थे। मुगलकाल में भारत को तृतीय चरण की नगरीय सभ्यता का स्वर्ण युग कहा गया है। आगरा और फतेहपुर लंदन से भी बड़े थे। इनके अतिरिक्त बनारस, पटना, हुगली, बहरानपुर, अहमदाबाद आदि बड़े समद्धशाली नगर थे।
आधुनिक युग शुरू होने से पहले ही भारत में विदेशी व्यापारिक कम्पनियों ने भारत में मुगल बादशाहों से अनुमति लेकर भारत में अपनी–अपनी व्यापारिक कोठियाँ, किले, बंदरगाह, गोदिया स्थापित करने शुरू कर दिए। इन सभी विदेशों व्यापारिक कम्पनियों में पुर्तगाली, डच, अंग्रेज, फ्रांसिस, डेन इत्यादि ने भारत

में अनेक नगरों जैसें गोवा, बम्बई, मछलीपट्टनम, नागपट्टम, कोलकत्ता, पाण्डिचेरी, चन्द्रनगर, सूरत इत्यादि व्यापारिक कोठिया स्थापित की।

प्रारम्भिक तीन बड़ी प्रेजीडेंसियों बम्बई, कोलकत्ता, मद्रास, ये तीनों विदेशी व्यापारिक कम्पनियों द्वारा स्थापित की गई, जिनका बाद के वर्षो में अपना महत्व तथा विकास बढ़ता गया जो वर्तमान में भारत के महानगरों में गिने जाते थें। भारत में पूर्णतः नगरीकरण ब्रिटिश साम्राज्य को समाप्ति तथा भारत की आजादी के बाद ही सही ढ़ग से शूरू हुआ, जिससे भारत में बड़े–बड़े नगरों तथा महानगरों का विकास हुआ।

निष्कर्ष

मोहनजोदड़ो और हड़प्पा प्राचीनतम नगरों में से थे जो 2600 और 1900 बी॰सी॰ई॰ के बीच उपमहाद्वीप के उत्तर–पश्चिमी हिस्से में अस्तित्व में आए। बड़ी संख्या में हड़प्पा कालीन स्थलों, बड़े और छोटे दोनों, का उत्खन्न किया गया हे। इन प्रचुर आकंड़ो ने अनेक विषयों जैसे व्यापार, राजनीतिक संगठन, प्रौद्योगिकियों और शिल्पों, भूगर्भीय उद्गम स्थल अध्ययनों और हड़प्पाकालीन नगरीय केंद्रों के पतन के संबंध में विस्तृत अध्ययन को संभव बनाया है। लगभग 1400 वर्षो के अंतराल के पश्चात् नगरीय केंन्द्रो की अगली अवस्था लगभग 500 बी॰सी॰ई॰ में दृष्टिगत होती है। प्रांरभिक ऐतिहासिक नगरों संबंधी अध्ययनों को तीन समूहों में विभाजित किया जा सकता है प्रथम जो ग्रथों पर आधारित है, दूसरा नगरीकरण और नगरवाद का संश्लेषण है, और तीसरे में नगरीय केन्द्रो के विभिन्न पहलुओं की विशेष रूप से जाँच के लिए किए गए सर्वेक्षण तथा उत्खन्न आते हैं। हड़प्पा सभ्यता की तुलना में प्रांरभिक ऐतिहासिक नगरों के बारे में काफी कम जानकारी उपलब्ध है क्योंकि इन दोनों अवधियों के पुरातात्विक शोधों में काफी असमानता है। हड़प्पा और प्राचीन ऐतिहासिक नगरों के संबंध में जो कुछ पहले लिखा जा जुका है उसके बावजूद विशेषकर अधिक व्यवस्थित सर्वेक्षणों तथा विस्तृत संदर्भीय प्रलेखीकरण के साथ सजग उल्खन्नों के माध्यम से भविष्य में काफी कुछ जाँच की जा सकती है।

संदर्भ सूची

1. हेडेन, डोलोरेस, (1996) दि पॉवर ऑफ प्लेसः अर्बन लैडंस्केप्स ऐज पब्लिक हिस्ट्री (कैम्ब्रिजः एम एः एम आई टी प्रेस)
2. आलचिन, एफ.आर., (1982) 'दि लीगैसी ऑफ इण्डस सिविलाईजेशन', जी. एल पोसेहेल, संपा, हड़प्पन सिविलाइजेशन :ए कन्टेम्परेरी पर्सपेक्टिव, (नई दिल्लीः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिट प्रेस एंड आई बी एच) पृ॰ 325–33
3. चट्टोपाध्याय, बी., (2003) 'दि सिटी इन अर्ली इंडिया : पर्सपेक्टिव फ्रॉम टेक्स्ट्स' बी. चट्टोपाध्याय, स्टडीइंग अर्ली इंडिया : आर्कीआलजी, टेक्स्ट्स, एण्ड हिस्टॉरिकल इश्यूज (दिल्लीःपर्मानेट ब्लैक), पृ॰ 105–134
4. एर्डोसी, जी., (1998) अर्बनाइजेशन इन अर्ली हिस्टॉरिक इंडिया (ऑक्सफोर्डः बी ए आर इंटरनेशनल सिरीज)
5. फेयरसर्विस, डब्ल्यू. ए., (1961 पुनम्रुद्रित 1979) 'दि हड़प्पन सिविलाइजेशन : न्यू एविडेन्स एंड मोर थ्योरी', जी. एलः पोसहल, संपा., एन्सिएन्ट सिटीज ऑफ दि इण्डस (नई दिल्लीः विकास), पृ॰ 49–65
6. हबीब, आई., (2002) दि सिविलाइजेशन (नई दिल्ली : तूलिका)
7. झा, एस, के. (1998) बिगिनिंग्स ऑफ अर्बनाइजेशन इन अर्ली हिस्टॉरिक इंडियाः ए स्टडी ऑफ दि गैंगेटिक प्लेन्स (पटना :नोवेल्टी एडं कम्पनी)
8. केनोयर, जे॰एम॰ (1998) एन्सिएन्ट सिटीज ऑफ दि इन्डस वैली सिविलाइजेशन (कराचीः आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस)